चकमक का नाम कैसे पड़ा?

चकमक – बाल विज्ञान पत्रिका का नाम कैसे पड़ा? इसके पीछे एक रोचक कहानी है। मैं पुणे स्थित टाटा ट्रक के कारखाने में नौकरी करता था। 1978 में मैं एक वर्ष की छुट्टी लेकर किशोर भारती गया जहां मैंने होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम में काम किया। उसमें मुझे बहुत मजा आया। होशंगाबाद विज्ञान के सम्पर्क में आने के बाद से मुझे उनकी पत्रिका 'होशंगाबाद विज्ञान' नियमित रूप से मिलती रहती थी। 1983 में इस पत्रिका में मैंने एक इश्तहार देखा। एकलव्य समूह एक मासिक बाल विज्ञान पत्रिका शुरू करना चाहता था। पत्रिका के लिए एक उपयुक्त नाम की खोज के लिए ही उन्होंने इश्तहार दिया था। चुने हुए नाम पर सौ रुपये के ईनाम की भी घोषणा थी।

मैंने भी अपना सिर खुजलाया। उस समय मैं छत्तीसगढ़ में एक मजदूर संगठन के साथ काम करता था। तभी मैंने रूस के क्रांतिकारी नेता व्लादिमीर लेनिन के बचपन पर एक बढ़िया पुस्तक पढ़ी थी। पुस्तक का नाम था *'द अर्ली लेनिन'* और लेखक थे लीओन ट्राटस्की। इस पुस्तक के एक अंश का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा था।

लेनिन ने भले ही मजदूर और किसानों की अगुवाई की हो पर दरअसल लेनिन एक बहुत ही संभ्रांत, पढ़े-लिखे, मध्यम वर्गीय परिवार में पैदा हुए थे। लेनिन के पिता इल्या एक उच्च सरकारी अधिकारी थे। 1894 में वो सम्पूर्ण सिम्बर्स्क इलाके के शिक्षा निदेशक थे। लेनिन की मां मॉरिया एक स्कूल टीचर थीं। बड़ा भाई ऐलिक्जेंडर विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र पढ़ता था। बहन ऐना सुन्दर चित्रकार थी। लेनिन को शतरंज और पुस्तकों से अभिन्न प्रेम था। पिता स्कूल के दौरों से वापस आने पर जारशाही से पिस रहे ग्रामीणों की दयनीय परिस्थितियों का वर्णन करते थे। इसका लेनिन के दिल पर जरूर असर हुआ होगा।

घर में एक उन्मुक्त बौद्धिक माहौल था। इसका अंदाज 'घर के अखबार' से लगता है। चार पन्नों के इस अखबार में लेनिन के पिता अपनी यात्राओं की कहानियां लिखते थे। भाई ऐलिक्जेंडर विज्ञान विषय पर कोई लेख लिखते। मां स्कूल में बच्चों के साथ की किसी गतिविधि के बारे में लिखतीं। लेनिन कोई पुस्तक समीक्षा लिखते। और छोटी बहन ऐना इस चार पन्नों के हाथ से लिखे साप्ताहिक अखबार को अपने चित्रों से सजातीं।

हर रविवार, नाश्ते की मेज पर पहले यह 'घर का अखबार' पढ़ा जाता और उसके बाद ही नाश्ता शुरू होता। अपने घर के बौद्धिक माहौल और 'घर के अखबार' का लेनिन पर जरूर गहरा प्रभाव पड़ा होगा।

लेनिन के भाई ऐलिक्जेंडर को जार की हत्या के आरोप में 1894 में फांसी पर चढ़ा दिया गया। उसके बाद लेनिन को 14 महीने जेल में रखने के बाद देश से निकाल दिया गया। 1900 में देश से निकाले जाने पर लेनिन म्यूनिख, जर्मनी में रहने लगे। रूस के अन्य क्रांतिकारियों को भी पश्चिमी योरुप के भिन्न देशों में पनाह लेनी पड़ी। म्यूनिख में लेनिन ने अपनी पत्नी क्रुप्सकाया और अन्य साथियों के साथ मिलकर एक नया अखबार शुरू किया। अखबार का उद्देश्य भिन्न देशों में बिखरे हुए रूसी क्रांतिकारी को आपस में जोड़ना था।

इस क्रांतिकारी अखबार का नाम था – 'इसकरा'। इसकरा एक रूसी शब्द है जिसका मतलब होता है 'चिंगारी'। हम सब जानते हैं कि चिंगारी **चकमक** पत्थर से पैदा होती है। इसलिए मैंने एकलव्य की बाल विज्ञान पत्रिका के लिए **चकमक** नाम सुझाया। एकलव्य टीम को यह नाम पसंद आया मुझे सौ रूपये का पुरुस्कार भी मिला। **चकमक** की चिंगारी तो एक क्षण में ही बुझ जाती है। पर इस चिंगारी को तमाम लोगों ने एक लम्बे अर्से अंक तक जिन्दा रखा है। **चकमक** पास होने से तुम दुबारा चिंगारी पैदा कर सकते हो। अंधेरा चाहें कितना भी गहरा हो फिर भी **चकमक** से तुम्हें मंजिल तक पहुंचने में जरूर मदद मिलेगी।

अरविन्द गुप्ता

चित्र: कैरन हैडाक